7/2/22 डा. गिरजा उपर्व
एसोसिएट प्रोफेसर
विषय मनोविज्ञान (2)

जोड़ भाग →

5. दैहिक दृष्टिकोण (physiological viewpoint) →
यह दृष्टिकोण शारीरिक लम्बाई तथा शारीरिक संगठन (organisation) को ही असामान्यता का आधार मानता है। इसके अनुसार औसत से अधिक लम्बा या नाटा व्यक्ति असामान्यता होता है। इसी प्रकार अन्धे, बहरे या गूँगे को भी असामान्य कहा जा सकता है।

किन्तु यह दृष्टिकोण भी दोषपूर्ण है। वस्तुतः शारीरिक लम्बाई के संगठन के आधार पर किसी व्यक्ति को सामान्य या असामान्य नहीं कहा जा सकता, क्योंकि औसत कद का व्यक्ति भी अपने वातावरण में अभियोजित नहीं हो पाता है, लेकिन बहुत लम्बा या नाटा व्यक्ति अथवा विकलांग (Handicapped) व्यक्ति अपने वातावरण में अभियोजित हो जाता है। अतः सभी स्थलों पर असामान्यता की व्याख्या करना इस दृष्टिकोण से सम्भव नहीं है।

6. व्याधिकीय दृष्टिकोण (pathological viewpoint) →
यह दृष्टिकोण मानसिक विकृतियों को असामान्यता का आधार मानता है। इसके अनुसार जो लोग मानसिक रोग से ग्रस्त हैं वे असामान्य है। मानसिक रोग दो प्रकार के हैं— मनःस्नायुविकृति (psychoneurosis) तथा मनोविकृति (psychosis) फिर, इन दोनो में विभिन्न प्रकार है जिसकी व्याख्या स्थल-विशेष पर होगी। जो लोग किसी मानसिक रोग से ग्रस्त है उनका व्यवहार अन्य लोगों से भिन्न हो जाता है। फलतः वे अभियोजन स्थापित करने में असमर्थ हो जाते हैं।